अध्याय 11

यरूशलेम और यहूदा के नए निवासी

यरूशलेम की शहरपनाह के पुनः निर्माण के पश्चात, नहेम्याह इस तथ्य से अवगत हुआ कि "नगर तो लम्बा चौड़ा था, परन्तु उस में लोग थोड़े थे" (7:4)। इस समस्या के समाधान के लिए, उसने लोगों "इकट्ठा" करने का निर्णय लिया जिससे कि "वे अपनी अपनी वंशावली के अनुसार गिने जाएं" (7:5)। उसे उन लोगों का "वंशावलीपत्र" मिला जो बाबुल से यहूदा लौटे थे, और उसने इस लेख को अपने वृत्तान्त में सम्मिलित कर लिया (7:6-73)।

नहेम्याह की पुस्तक, अध्याय 8 से लेकर 10 तक में दिखाती है कैसे यहूदियों ने परमेश्वर के साथ अपनी वाचा का नवीनीकरण किया। अध्याय 11 फिर शहर की कम आबादी के विषय पर लौट कर आता है, इस बात का स्पष्टीकरण करता है कि उसकी आबादी को पुनः बसाने तथा पुनः व्यवस्थित करने का काम कब और किसने किया तथा यहूदा के अन्य लोग कहाँ निवास करते थे। अध्याय 12 में शहरपनाह के समर्पण का वृत्तान्त है, जो लोगों के लिए बड़े आनन्द का समय था।

जब हमारे सामने अध्याय 11 के समान सूचियाँ आती हैं, हम अचरज कर सकते हैं कि वे क्यों दी गई हैं। प्रेरणा से प्राप्त हुए परमेश्वर के वचन में इस प्रकार की सामग्री की क्या आवश्यकता होगी?

एक उत्तर तो यह है कि लेखक का विचार था कि जिन तथ्यों को वह लिख रहा है उन्हें स्मरण रखने की आवश्यकता है। निःसंदेह, वह - सचेतन तथा जानते-बूझते हुए - एक इतिहासकार या पुरात्वविद रहा होगा। उसने उन लेखों का प्रयोग किया जो उसकी पीढ़ी को थमाए गए थे, साथ ही वह भी एक ऐसा लेख तैयार कर रहा था जिसे उसके उद्देश्यानुसार भावी पीढ़ियां पढ़ेंगी।

एक अन्य उत्तर शहर की आबादी के पुनःस्थापन पर आधारित है। नहेम्याह की पुस्तक यहूदा राष्ट्र के पुनः प्रवर्तन के विषय में है। जब तक कि यरूशलेम सुरक्षित नहीं होता राष्ट्र के पुनः निर्माण को पूरा नहीं समझा जा सकता था, और यरूशलेम तब तक सुरक्षित नहीं था जब तक उसकी शहरपनाह का पुनः निर्माण नहीं होता और वह ऐसे लोगों से भर नहीं जाता जो उसकी रक्षा कर पाने में सक्षम हों।

एक तीसरा उत्तर यह है कि इस अध्याय का उद्देश्य यह दिखाना है कि जिस प्रकार वाचा पुनः स्थापित की गई थी, राष्ट्र का भी पुनः प्रवर्तन हुआ था। उसके

प्रमुख शहर की आबादी को पुनः स्थापित किया गया था, उसके लोग व्यवस्थित किए गए थे, और यहूदी सारे देश में निवास कर रहे थे। इस अध्याय में अच्छा समाचार यह है कि यहूदा, उसके "पवित्र शहर," यरूशलेम, के साथ फिर से जीवन में आ गया था!

यहूदी, लेखक के साथ, अपने मूल आधार और परमेश्वर के लोग होने के रूप में व्यवस्थित होने को जानते थे। डेरेक किडनर ने उनका वर्णन, "वे शरणार्थियों का ऐसा जमघट, जो कहीं भी जम जाता हो, नहीं थे: उनमें व्यवस्थित संबंधों की प्रगट मर्यादा थी; और सबसे बढ़कर, इस बात की, कि वे "याजकों का राज्य और पवित्र जाति (निर्गमन 19:6)" होने के लिए बुलाए गए थे।[1]

यरूशलेम की आबादी की पुनःस्थापना (11:1, 2)

[1]प्रजा के हाकिम तो यरूशलेम में रहते थे, और शेष लोगों ने यह ठहराने के लिये चिट्ठियाँ डालीं, कि दस में से एक मनुष्य यरूशलेम में, जो पवित्र नगर है, बस जाएँ; और नौ मनुष्य अन्य नगरों में बसें। [2]जिन्होंने अपनी ही इच्छा से यरूशलेम में वास करना चाहा उन सभों को लोगों ने आशीर्वाद दिया।

इन आयतों में एक समस्या और उसके समाधान का संक्षिप्तीकरण दिया गया है।

आयत 1. समस्या यह थी कि, यद्यपि **प्रजा के हाकिम तो यरूशलेम में रहते थे**, किन्तु **शेष लोगों** में से अधिकांश अन्य स्थानों पर रहते थे। कम-से-कम कुछ लोगों को तो **पवित्र नगर** में निवास करना चाहिए था। यरूशलेम को "पवित्र नगर" इसलिए कहा गया है क्योंकि पवित्र मंदिर, परमेश्वर का निवास-स्थान, जिसमें "महापवित्र स्थान" था (2 इतिहास 3:8, 10; 5:7) इसी में पाया जाता था। परमेश्वर की उपस्थिति से मंदिर पवित्र होता था, और मंदिर से शहर पवित्र होता था। यरूशलेम का "पवित्र नगर" कहलाया जाना पुराने नियम में (11:18; यशा. 48:2; 52:1; दानिय्येल 9:24), और नए नियम में (मत्ती 4:5; 27:53; प्रका. 11:2) कदाचित ही आया है।[2] इसका उल्लेख एपोक्रिफा में भी होता है।[3]

यरूशलेम में जाकर बसने के लिए किसे कहा जा सकता था? क्योंकि पुनः स्थापित होना आकर्षक विकल्प नहीं था, इसलिए एकमात्र उचित विधि, यह जानने के लिए कि किसे पुनः स्थापित होने के लिए बाध्य किया जाए, थी कि **चिट्ठियाँ डालीं** जाएँ और प्रभु ही निर्धारित करे।[4] परिणाम यह हुआ कि 10 प्रतिशत लोग यरूशलेम में जाकर बस गए, जब कि 90 प्रतिशत लोग **अन्य नगरों में बसे** रहे।

आयत 2. चिट्ठियां डालने के द्वारा चुने जाने के अतिरिक्त, कुछ ने **अपनी ही इच्छा से यरूशलेम में वास करना चाहा**। इन दो समूहों में - जो चिट्ठियां डालकर चुने गए और जो स्वेच्छा से गए - परस्पर संबंध कैसे थे, यह अस्पष्ट है। संभवतः स्वेच्छा से जाने वाले एक अन्य अतिरिक्त समूह था जो शहर को गया। एक अन्य

संभावना है कि वे एक ही समूह थे। यह हो सकता है कि कुछ ने स्वेच्छा प्रकट की उन कुछ लोगों का स्थान लेने के लिए जो चिट्ठियां डालकर चुने गए किन्तु जाना नहीं चाहते थे। (यदि उनके स्थान पर कोई जाने को सहमत था, तो फिर उन्हें जाने से क्षमादान मिल गया।) एच. जी. एम. विलियमसन ने इस अंतिम विकल्प का पक्ष लिया: "यह ... संभव है कि जिन्होंने स्वेच्छा व्यक्त की वे उस दस प्रतिशत में सम्मिलित थे न कि उनमें जोड़े गए, क्योंकि उन्होंने उनकी संख्या को घटाया जिन्हें जाना पड़ा, उनके जहाँ वे थे वहीं रहने की पसन्द के होते हुए भी।"[5]

वे व्यक्ति, जो वह करने को तैयार थे जो राष्ट्र के लिए सर्वोत्तम था, चाहे वह अधिकांश के द्वारा लाभकारी परिवर्तन नहीं भी समझा जाता था, उन्हें **लोगों ने आशीर्वाद दिया**। चाहे आज हमें शहर की आबादी बढ़ाने के लिए जबरन लोगों को भेजना विचित्र प्रतीत हो सकता है, एडविन एम. यमौची ने ध्यान करवाया कि "आबादी को पुनः वितरित करने की प्रथा का उपयोग यूनानी और यहूदी-यूनानी शहरों की स्थापना के लिए भी किया गया।"[6]

जो यरूशलेम में रहे (11:3-24)

प्रांत के प्रमुख (11:3)

[3]उस प्रान्त के मुख्य मुख्य पुरुष जो यरूशलेम में रहते थे, वे ये हैं; परन्तु यहूदा के नगरों में एक एक मनुष्य अपनी निज भूमि में रहता था; अर्थात् इस्राएली, याजक, लेवीय, नतीन और सुलैमान के दासों की सन्तान।

आयत 3. शहर की आबादी को पुनः स्थापित करने के बाद यरूशलेम के निवासियों के लेखे का आरंभ एक विषय वाक्य से होता है। यह आयत इस वॉल्. में जिनका नाम दिया गया है, उनका परिचय **प्रान्त के मुख्य मुख्य पुरुष जो यरूशलेम में रहते थे** कहकर दिया गया है। यहाँ NASB ने एक वचन संज्ञा "प्रांत" (מְדִינָה, *मेदीना*) का गलत अनुवाद बहुवचन में किया है। इसलिए अगली आयतों में जिन व्यक्तियों को सम्मिलित किया गया वे लोगों के "हाकिम" (11:1) थे, यहूदा के प्रांत के मुख्य पुरुष। हाकिमों के इन समूहों की भी अगुवाई की गई, क्योंकि प्रत्येक समूह में ऐसे लोगों के नाम है जो उनकी गतिविधियों के प्रभारी थे। व्यक्तियों में से कई - दोनों ही, सामान्य व्यक्ति (**इस्राएली**), और वे जो मंदिर की सेवकाई के लिए समर्पित थे (**याजक, लेवीय, नतीन**[7] **और सुलैमान के दासों की सन्तान**[8]) - **यहूदा के नगरों में** निवास करते रहे या अपनी निज भूमि में रहते थे।

जो नाम 11:4-24 में दिए गए हैं उन्हें चार खण्डों में विभाजित किया गया है, "हाकिमों" के तीन समूहों को प्रमुख करके "राजा के पास" रहने वाले (11:24) के नाम के साथ समाप्त होते हैं। हाकिमों के तीन समूह लगभग व्यक्तियों के उन तीन समूहों के समान हैं जिन्होंने परमेश्वर की व्यवस्था के पालन के लिए इस्राएल के प्रण के दस्तावेज़ पर हस्ताक्षर किए थे। उनकी पहचान 9:38 में "हमारे हाकिम,

लेवीय और याजक," और अध्याय 10 में "याजक" (10:8), "लेवी" (10:9), और "प्रजा के प्रधान" (10:14) की गई है। 11:3-19 की सूची उसके समान (यद्यपि बिलकुल वैसी नहीं) है जिसमें बाबुल की बंधुवाई के पश्चात 1 इतिहास 9:2-27 में दी गई यहूदा में रहने वाले यहूदियों के नामों की है। यह समझना कठिन है कि एक सूची दूसरी से कैसे संबंधित है।

यहूदा और बिन्यामीन के वंश (11:4-9)

4यरूशलेम में तो कुछ यहूदी और बिन्यामीनी रहते थे। यहूदियों में से तो येरेस के वंश का अतायाह जो उज्जिय्याह का पुत्र था, यह जकर्याह का पुत्र, यह अमर्याह का पुत्र, यह शपत्याह का पुत्र, यह महललेल का पुत्र था। 5मासेयाह जो बारूक का पुत्र था, यह कोलहोजे का पुत्र, यह हजायाह का पुत्र, यह अदायाह का पुत्र, यह योयारीब का पुत्र, यह जकर्याह का पुत्र और यह शीलोई का पुत्र था। 6पेरेस के वंश के जो यरूशलेम में रहते थे, वह सब मिलाकर चार सौ अड़सठ शूरवीर थे। 7बिन्यामीनियों में से सल्लू जो मशुल्लाम का पुत्र था, यह योएद का पुत्र, यह पदायाह का पुत्र, यह कोलायाह का पुत्र, यह मासेयाह का पुत्र, यह इतीएह का पुत्र, यह यशायाह का पुत्र था। 8उसके बाद गब्बै सल्लै जिनके साथ नौ सौ अट्ठाईस पुरुष थे। 9इनका प्रधान जिक्री का पुत्र योएल था, और हस्सनूआ का पुत्र यहूदा नगर के प्रधान का नायब था।

आयतें 4-8. यरूशलेम में कुछ **यहूदी और बिन्यामीनी रहते थे**, दो गोत्रों के सदस्य जो यहूदा की दक्षिणी राज्य के थे, अश्शूर द्वारा उत्तरी राज्य के नाश किए जाने के पश्चात। इन गोत्रों के लोगों को बाबुल की बंधुवाई में ले जाया गया था फिर छोड़ दिया गया था। लेख में **यहूदियों में** से दो - **अतायाह** और **मासेयाह** की वंशावली दी गई है (11:4, 5)। इस वंश में से **जो यरूशलेम में रहते थे, वह सब मिलाकर चार सौ अड़सठ शूरवीर थे** (11:6) जो यरूशलेम की रक्षा करने के लिए बलवंत और साहसी थे। **बिन्यामीनियों में से** तीन का नाम दिया गया है: **सल्लू**, **गब्बै**, और **सल्लै**। बिन्यामीनियों का कुल योग **नौ सौ अट्ठाईस** कहा गया है (11:7, 8)।

आयत 9. इन आयतों में समूह के प्रभारी दो पुरुषों के नाम भी दिए गए हैं: **योएल** जो **इनका प्रधान** था, और **यहूदा** जो **नगर के प्रधान का नायब था**। "प्रधान" या "नायब" होने का वास्तविक अर्थ क्या था यह अज्ञात है, यद्यपि यह प्रकट है कि ये दोनों पुरुष किसी रीति से उनके, जिनका अभी उल्लेख हुआ है, अगुवे या प्रधान थे।

याजक (11:10-14)

10फिर याजकों में से योयारीब का पुत्र यदायाह और याकीन, 11और सरायाह जो परमेश्वर के भवन का प्रधान और हिल्कियाह का पुत्र था, यह

मशुल्लाम का पुत्र, यह सादोक का पुत्र, यह मरायोत का पुत्र, यह अहीतूब का पुत्र था, 12इनके आठ सौ बाईस भाई जो उस भवन का काम करते थे; और अदायाह, जो यरोहाम का पुत्र था, यह पलल्याह का पुत्र, यह अम्सी का पुत्र, यह जकर्याह का पुत्र, यह पशहूर का पुत्र, यह मल्किय्याह का पुत्र था, 13इसके दो सौ बयालीस भाई जो पितरों के घरानों के प्रधान थे; और अमशै जो अजरेल का पुत्र था, यह अहजै का पुत्र, यह मशिल्लेमोत का पुत्र, यह इम्मेर का पुत्र था, 14इनके एक सौ अट्ठाईस शूरवीर भाई थे और इनका प्रधान हग्गदोलीम का पुत्र जब्दीएल था।

आयतें 10-14. याजक जिनके नाम **यदायाह**, **याकीन**, **सरायाह**, **अदायाह**, तथा **जब्दीएल** थे। इनमें से दो को छोड़कर शेष सभी की वंशावलियां (कोई लंबी, कोई छोटी) दी गई हैं। लेख फिर कुछ याजकों के **भाइयों** का उल्लेख करता है। यह भी ध्यान करवाता है कि वे **भवन का काम करते थे**[9] और फिर उनकी संख्या **आठ सौ बाईस** बताता है (11:10-12)। अन्य **भाई** जो **पितरों के घरानों के प्रधान थे** उनका भी उल्लेख आया है; इनकी संख्या **दो सौ बयालीस** थी (11:13)। याजकों के वे **भाई** जो **शूरवीर** थे उनकी संख्या **एक सौ अट्ठाईस** दी गई है। "शूरवीर" के समान NIV में "योग्य पुरुष" आया है। यदि शहर पर हमला होता तो इन योग्य पुरुषों की आवश्यकता पड़ती।[10]

याजकों के नाम का अन्त उनके **प्रधान**, **हग्गदोलीम का पुत्र** "जब्दीएल" के साथ होता है (11:14)। "हग्गदोलीम" का अर्थ है "जो महान हैं।" यह व्यक्तिगत या पारिवारिक नाम हो सकता है, या यह महान योद्धाओं के कबीले से संबंधित हो सकता है जिसके साथ जब्दीएल का किसी प्रकार का संबंध होगा।

इन आयतों में याजकों के दो प्रधानों का उल्लेख है। "सरायाह" **जो परमेश्वर के भवन का प्रधान** था (11:11), संभवतः जिसका अर्थ है कि वह महायाजक था। जोसेफ ब्लेनकिनसोप्प का विचार था कि यह उपाधि, "जो मंदिर के एक से अधिक अधिकारियों के लिए प्रयोग की जा सकती थी (cf. 2 इतिहास 35:8), महायाजक तक सीमित होकर रह गई (1 इतिहास 9:20; 2 इतिहास 31:13)।"[11] दूसरा प्रधान जब्दीएल था जो कि "शूरवीरों" का "प्रधान" था (11:14)।

लेवी, और नतीन, द्वारपाल (11:15-23)

15फिर लेवियों में से शमायाह जो हश्शूब का पुत्र था, यह अज्रीकाम का पुत्र, यह हुशब्याह का पुत्र, यह बुन्नी का पुत्र था। 16शब्बत और योजाबाद मुख्य लेवियों में से परमेश्वर के भवन के बाहरी काम पर ठहरे थे। 17मत्तन्याह जो मीका का पुत्र और जब्दी का पोता, और आसाप का परपोता था; वह प्रार्थना में धन्यवाद करनेवालों का मुखिया था, और बकबुक्याह अपने भाइयों में दूसरा पद रखता था; और अब्दा जो शम्मू का पुत्र, और गालाल का पोता, और यदूतून का परपोता था। 18जो लेवीय पवित्र नगर में रहते थे, वह सब मिलाकर दो सौ

चौरासी थे। 19अक्कूब और तल्मोन नामक द्वारपाल और उनके भाई जो फाटकों के रखवाले थे, एक सौ बहत्तर थे। 20शेष इस्राएली याजक और लेवीय, यहूदा के सब नगरों में अपने भाग पर रहते थे। 21नतीन लोग ओपेल में रहते; और नतिनों के ऊपर सीहा, और गिश्पा ठहराए गए थे। 22जो लेवीय यरूशलेम में रहकर परमेश्वर के भवन के काम में लगे रहते थे, उनका मुखिया आसाप के वंश के गवैयों में का उज्जी था, जो बानी का पुत्र था, यह हशब्याह का पुत्र, यह मत्तन्याह का पुत्र और यह हशब्याह का पुत्र था। 23क्योंकि उनके विषय राजा की आज्ञा थी, और गवैयों के प्रतिदिन के प्रयोजन के अनुसार ठीक प्रबन्ध था।

इस वॉल्. का तीसरा समूह लेवियों का और जो उनके साथ काम करते थे: द्वारपाल तथा नतीन, का है।

आयतें 15-19. इस वॉल्. में प्रथम उप-समूह **लेवियों** से बना है (11:15)। जिन व्यक्तियों के नाम दिए गए हैं उनमें से अधिकांश की वंशावलियां भी दी गई हैं: **शमायाह** (11:15), **शब्बत** (11:16), **योजाबाद** (11:16), **मत्तन्याह** (11:17), **बकबुक्याह** (11:17), **अब्दा** (11:17)। **जो लेवीय पवित्र नगर में रहते थे,** उनकी संख्या **दो सौ चौरासी** थी (11:18), साथ ही **एक सौ बहत्तर** और **उनके भाई जो फाटकों के रखवाले थे** (11:19)।

आयत 20. लेखक ने थोड़े समय के लिए अपना ध्यान यरूशलेम से हटाकर अपने पाठकों को स्मरण करवाया कि (जैसा उसने पहले कहा था; देखें 11:1, 3) सभी लेवीये (या याजक या सामान्य लोग) यरूशलेम में नहीं रहते थे। वरन, उसने कहा, **शेष इस्राएली** जिनमें कुछ **याजक** और **लेवीय** सम्मिलित थे, **यहूदा के सब नगरों में अपने अपने भाग पर**, या पुरखों की जायदाद (NIV) पर रहते थे। यमौची ने ध्यान किया कि इब्रानी शब्द נַחֲלָה (*नकालाह*) का प्रयोग "उस अपरिवर्तनीय पैतृक संपत्ति, जिसमें भूमि, भवन, और चल संपत्ति, जो चाहे विजय अथवा विरासत से मिली हो, के लिए होता है (उत्पत्ति 31:14; गिनती 18:21; 27:7; 34:2; 1 राजा. 21:3-4)।"[12]

आयत 21. यद्यपि कुछ लेवीय और याजक यरूशलेम के बाहर के नगरों में रहते थे, **नतीन लोग ओपेल में रहते**, दाऊद के नगर के उत्तर में स्थिर पहाड़ी पर, जहाँ से मार्ग मंदिर की पहाड़ी की ओर जाता था (देखें 3:26, 27)।

आयतें 22, 23. लेख उस व्यक्ति का नाम (और वंशावली) उल्लेखित करता है जो **उनका मुखिया** था **जो लेवीय यरूशलेम में** थे: **उज्जी** जो **आसाप के वंश** से था। आसाप के वंशज मंदिर **के गवैयों में** थे। उनकी भूमिका का पर्याप्त महत्व था **क्योंकि उनके विषय राजा की आज्ञा थी, और गवैयों के प्रतिदिन के प्रयोजन के अनुसार ठीक प्रबन्ध था**। "उनके विषय राजा की आज्ञा थी" का अभिप्राय दाऊद द्वारा "लेवियों की सेवकाई, गवैयों सहित प्रबंधित की गई थी (1 इतिहास 25)" हो सकता है।[13] एक अन्य संभावना यह भी है कि "राजा" का अभिप्राय फारस के राजा से था, और आयत 23 उसके द्वारा मंदिर के गवैयों के भरण-पोषण के विषय कहती है।

आयत 23 के अनुवाद अलग-अलग हैं। KJV कहती है, "उनके विषय राजा की आज्ञा थी, कि एक विशेष भाग गवैयों के लिए हो, प्रतिदिन के लिए।" NAB में आया है "उन्हें राजाज्ञा द्वारा नियुक्त किया गया था, और गवैयों का उनके दैनिक कार्यों के लिए एक निर्धारित कार्यक्रम था।" NJB कहती है "क्योंकि गवैये राजाज्ञा के अंतर्गत थे, जिसमें उनसे प्रतिदिन की अपेक्षा नियमबद्ध की गई थी।" किडनर ने जिसे "वह जो निश्चित या दृढ़ है, और जिसकी अधिक संभावना 'नियम' होने की है, न कि 'ठीक प्रबन्ध' की" परिभाषित किया है, वह उस "दृढ़ निर्देश" के लिए इब्रानी शब्द אֲמָנָה (*मनाह*) है।[14]

समस्त समूह पर प्रभारी लोग भी थे। जिनकी मुखिया कहकर पहचान दी गई है वे "शमायाह" और "शब्बत" हैं जो परमेश्वर के भवन के बाहरी काम पर ठहरे थे (11:15, 16)। "मत्तन्याह" "प्रार्थना में धन्यवाद करनेवालों का मुखिया था," और "बकबुक्याह" के लिए बस यही कहा गया है कि वह "अपने भाइयों में दूसरा पद रखता था" (11:17)। "अक्कूब और तल्मोन" संभवतः "फाटकों के रखवालों" के ऊपर थे (11:19), जबकि "सीहा, और गिश्पा" "नतिनों के ऊपर" थे (11:21)। अन्त में "उज्जी" को "लेवियों का मुखिया" बताया गया है (11:22)।

राजा के प्रतिनिधि (11:24)

[24]प्रजा के सब काम के लिये मशेजबेल का पुत्र पतह्याह जो यहूदा के पुत्र जेरह के वंश में था, वह राजा के पास रहता था।

अंतिम नाम एक ऐसे व्यक्ति का है जो उपरोक्त समूहों में से किसी में भी सटीक नहीं बैठता है - राजा का एक प्रतिनिधि।[15]

आयत 24. पतह्याह राजा के पास रहता था या उसका "प्रतिनिधि" था (NIV)। इस विवरण का शब्दार्थ है "[वह व्यक्ति जो] राजा के निकट हो।" इसलिए कुछ का विचार है कि यह अधिकारी एक यहूदी था जो "फारस के राज-दरबार में इस्राएलियों का प्रतिनिधि था।"[16] यदि ऐसा है तो वह लोगों की ओर से राजा के समक्ष प्रतिनिधि था न कि राजा की ओर से।

वे नगर जिनमें अन्य यहूदी रहते थे (11:25-36)

[25]बच गए गाँव और उनके खेत; अतः कुछ यहूदी किर्यतर्बा, और उनके गाँव में, कुछ दीबोन, और उसके गाँवों में, कुछ यकब्सेल और उसके गाँवों में रहते थे। [26]फिर येशू, मोलादा, बेत्पेलेत; [27]हसर्शूआल, और बेर्शेबा और उसके गाँवों में; [28]और सिकलग और मकोना और उनके गाँवों में; [29]एन्निम्मोन, सोरा, यर्मूत, [30]जानोह और अदुल्लाम और उनके गाँवों में, लाकीश और उसके खेतों में, अजेका और उसके गाँवों में वे बेर्शेबा से ले हिन्नोम की तराई तक डेरे डाले हुए रहते थे। [31]बिन्यामीनी गेबा से लेकर मिकमश, अय्या और बेतेल और उसके गाँवों में; [32]अनातोत, नोब, अनन्याह, [33]हासोर, रामा, गित्तैम, [34]हादीद, सबोईम,

नबल्लत, [35]लोद, ओनो और कारीगरों की तराई तक रहते थे। [36]यहूदा के कुछ लेवियों के दल बिन्यामीन के प्रान्तों में बस गए।

लेख में यह स्पष्ट किया जा चुका है कि कई अन्य इस्राएली (याजकों और लेवियों सहित) यरूशलेम के बाहर रहते थे। यह वॉल्. इस तथ्य को और विस्तृत करता है, और बाहर रहने वालों के नाम देने के स्थान पर, ये आयतें यह बताती हैं कि वे कहाँ रहा करते थे।

आयतें 25-35. इन आयतों में दिए गए शहरों के नाम के साथ अभिव्यक्तियाँ, **और उनके गाँव में** और **उसके गाँवों में** भी जुड़ी हुई हैं। उदाहरण के लिए आयत 25 **कियर्तबा** [हेब्रोन] **और उनके गाँव** का उल्लेख करती है। विचार यह है कि छोटे शहरों की परिधि के बाहर भी नगर या गाँव होते थे जो राजनैतिक, सामाजिक, और व्यावसायिक रीति से उनके साथ जुड़े होते थे। इस संपूर्ण वॉल्. में जिस इब्रानी शब्द का अनुवाद "गाँव" (בְּנוֹת, *बनोथ*) हुआ है उसका अर्थ "पुत्रियां" है।

इस सूची की दो बातें प्रभावी हैं। पहली, इन विभिन्न स्थानों में सम्मिलित क्षेत्र काफी व्यापक है।[17] वे **गाँव** दक्षिण में **बेर्शेबा** से लेकर, यरूशलेम के उत्तर में **बिन्यामीनी** क्षेत्र तक स्थित थे। इस क्षेत्र के विस्तार पर दिया गया ज़ोर 11:30 से प्रगट है: **वे बेर्शेबा से ले हिन्नोम की तराई तक डेरे डाले हुए रहते थे** - क्षेत्र के दक्षिण से लेकर यरूशलेम के बाहर के क्षेत्र तक। वास्तव में, इन शहरों द्वारा घेरे में लिया गया क्षेत्र छोटे फारसी प्रांत येहुद (यहूदा) के क्षेत्र से काफी अधिक था। एफ. चार्ल्स फेनशैम का विचार था कि यद्यपि यहां जिन स्थानों के नाम दिए गए हैं उससे अनेकों को यह विश्वास होता है कि यहूदा उससे कहीं बड़ा लगता है, जितना वह वास्तव में था: "यह सूची यहूदा प्रांत की सीमा का वर्णन नहीं करती है - ऐसा दावा कहीं नहीं किया गया है - वरन हमें बस उन स्थानों के नाम प्रदान करती है जहाँ यहूदी काफी संख्या में रहते थे।"[18] जेकब एम. मेयर्स के अनुसार यहूदी यहूदा प्रांत के बाहर रह सकते थे: "यहूदी लोग साम्राज्य के नागरिक थे और निःसंदेह उन्हें सामान्य नागरिकता अधिकार प्राप्त थे, जिसमें साम्राज्य में आवाजाही का अधिकार सम्मिलित था।"[19] लेखक के उस समय के पाठकों के लिए, सन्देश यही था, "यहूदी वापस आ गए हैं!" वे अब उस सारे देश में रह रहे हैं जो परमेश्वर ने इस्राएल को दिया था।

दूसरे, शहरों के नाम देखने के द्वारा पाठकों के मनों में ऐतिहासिक घटनाओं की स्मृति जाग उठी होंगी। वाक्य कि वे देश में "डेरे डाले हुए रहते थे" (11:30) अवश्य ही उन स्मृतियों को जागृत करते होंगे जब इस्राएली जंगल की यात्रा में थे।[20] इन आयतों में यहोशू 15 में दिए गए अधिकांश शहरों का उल्लेख है, इसलिए उनके इस उल्लेख से यहूदियों को वे दिन स्मरण हो आए होंगे जब इस्राएलियों ने देश को जीता था। कुछ स्थानों के उल्लेख से यहूदी इतिहास की कुछ विशेष घटनाएँ उन्हें स्मरण आई होंगी, पितरों के समयों से लेकर राजा के दिनों तक की।[21]

इन्हें साथ लेने के द्वारा, इन दोनों बातों ने यहूदियों को प्रोत्साहित किया होगा

और उन्हें बोध करवाया होगा कि इस्राएल राष्ट्र की वास्तव में पुनःस्थापना हो गई है। न केवल "पवित्र नगर" आबाद हो गया था, परन्तु इस्राएल के लोग अब उन्हें परमेश्वर द्वारा दिए गए देश में सभी स्थानों पर निवास कर रहे थे। इस स्थान पर होने से निःसंदेह उनकी स्मृतियाँ जागृत हुई होंगी और उनकी आत्माएं भी ताज़ा हुई होगी।

आयत 36. इस वॉल्. का अन्त यह कहने के द्वारा होता है कि कुछ लेवी, **बिन्यामीन** के शहरों में रहने लगे। इसलिए वे भूतपूर्व बंदियों को परमेश्वर की आज्ञाओं को समझाने और मानना सिखाने में सहायक होने के लिए उपलब्ध होंगे। वे लोगों से दशमांश एकत्रित करने के लिए भी अधिक अच्छी स्थित में होंगे (देखें 10:37)।

अनुप्रयोग

प्रभावी नेतृत् : लोगों के महत्व को समझना (अध्याय 11)

एक अगुवा सभी बातों - भवन और बैंक खाते, सामग्री और उपकरण, लाभ और कर, सरकारी नियम, विक्रय संख्याएँ और भावी अनुमान, विज्ञापन, लागत घटाना, और आय बढ़ाना आदि, सभी बातों के विषय ध्यान रखता है। परन्तु, वह नेतृत्व प्रदान करने में संभवतः असफल रहेगा, यदि वह लोगों के विषय चिन्तित नहीं है। व्यक्ति, न कि संपत्ति और जायदाद, उसके ध्यान का केन्द्र होने चाहिए। किसी भी व्यवसाय या कलीसिया का अगुवा नहेम्याह से शिक्षा ले सकता है; वह ऐसा अगुवा था जो व्यक्तियों को महत्व देता था।

जो भी नहेम्याह की पुस्तक पढ़ता है, वह वहाँ दिए गए व्यक्तियों के नामों को पढ़कर प्रभावित अवश्य होगा। लोगों के नामों की सूचियाँ अध्याय 3, 7, 8, 10, 11, तथा 12 में मिलती हैं। लेखक ने इतने नामों को सम्मिलित क्यों किया? अन्य उत्तर भी दिए जा सकते हैं, परन्तु यह प्रत्यक्ष दिखता है कि उसने इन लोगों के नाम इसलिए लिये क्योंकि वह उनमें रुचि रखता था। उनमें से कई पहले रहा करते थे, परन्तु वह उन्हें जानता था; और यदि पहले के लोग उसके लिए महत्वपूर्ण थे, तो फिर वह उन लोगों के विषय कितना चिन्तित रहा होगा जिन्हें वह व्यक्तिगत रीति से जानता था!

उसने उन व्यक्तियों का लेखा रखा जिनके साथ वह काम करता था। वे केवल व्यवस्था को पढ़ने और समझाने में एज्रा की सहायता करने वाले "लेवी" ही नहीं थे; वे व्यक्तित्व रखने वाले लोग थे, जैसे कि "येशू, बानी, शेरेब्याह" (8:7)। लेखक ने उन्हें केवल यरूशलेम में रहने वाले यहूदा और बिन्यामीन के गोत्रों के अगुवे ही नहीं समझा; वे परिवारों वाले व्यक्ति थे, जैसे कि "अतायाह" और "मासेयाह" (यूहन्ना 11:4, 5)।

इसका यह अभिप्राय नहीं है कि नहेम्याह समस्त समूह के विषय उदासीन था। वह कुल योग रखने में रुचि रखता था। उदाहरण के लिए, उसने लेखा लिखा कि यरूशलेम में कितने यहूदावंशी और कितने बिन्यामीनी थे, और उसने बाबुल से

आकर यहूदा में बसने वाले यहूदियों का लेखा रखा। किन्तु वह केवल कुल योग के विषय में ही रुचि नहीं रखता था; उसकी रुचि उन व्यक्तियों में थी जिनसे वह कुल योग बनता था।

आज अगुवों को उन लोगों के महत्व का ध्यान रखना सीखना चाहिए जिनकी वे अगुवाई करते हैं - केवल एक समूह नहीं, वरन व्यक्ति भी! अवश्य ही, अगुवे को रुचि तथा चिंता होनी चाहिए उसके प्रयासों से प्रभावित होने वाले लोगों की कुल संख्या में। इसलिए उसे सही गणना रखने का प्रयास तथा बदलती हुई संख्या, औसत, और प्रवृत्तियों की समीक्षा भी करते रहना चाहिए। उदाहरण के लिए, उसे अवगत होना चाहिए कि उसकी संस्था पिछले वर्ष से अधिक अच्छा कर रही है कि नहीं। परन्तु प्रभावी अगुवे की चिंता केवल उसकी कंपनी की स्थिति तक ही सीमित नहीं है; उसे यह भी जानना होता है कि उसकी कंपनी के व्यक्ति कैसे हैं!

अगुवे औरों के प्रयासों को दिशा देते हैं, परन्तु जिन "औरों" को वे निर्देशित करते हैं वे कोई चेहरा विहीन समूह नहीं हैं। वे व्यक्ति हैं, प्रत्येक का अपना नाम, व्यक्तित्व, पृष्ठभूमि, समस्याएं, तथा संभावनाएं हैं। किसी भी संस्था में, एक अगुवा प्रेरणा देने, प्रोत्साहित करने, तथा औरों के कार्य को निर्देशित करने में अधिक प्रभावी होगा यदि वह अपने अनुयायियों को व्यक्तिगत रीति से जानता है।

व्यक्तियों के विषय चिन्तित रहना बाइबल से प्रगट है। परमेश्वर, जो सर्वोच्च अगुवा है, वह प्रत्येक व्यक्ति के विषय चिन्तित है; उसने अपने पुत्र को प्रत्येक के लिए मरने के लिए भेजा (यूहन्ना 3:16)। जो उद्धार पाए हुए हैं उन व्यक्तियों के नाम "जीवन की पुस्तक" में लिखे गए हैं (फिलि. 4:3; प्रका. 20:12, 15)। क्योंकि यीशु "अच्छा चरवाहा" है, वह अपनों को जानता है; और उसके अपने उसे जानते हैं (यूहन्ना 10:11, 14)।

यीशु का अपने विषय दिया गया वर्णन उनके लिए विशेषतः अर्थपूर्ण होना चाहिए जो स्थानीय मंडलियों के अगुवे हैं क्योंकि वे न केवल "अध्यक्ष" के नाम से जाने जाते हैं, परन्तु परमेश्वर के झुण्ड के "रखवाले" या "पास्टर" (प्रेरितों 20:28; इफि. 4:11) नामों से भी जाने जाते हैं। कलीसिया के अगुवे (प्राचीन), मसीह जो "प्राणों का रखवाला और अध्यक्ष" (1 पतरस 2:25) है, के अधीन चरवाहे हैं, उन्हें झुण्ड को जानना चाहिए। बाइबल के समय में आदर्श चरवाहा वह था जो अपनी प्रत्येक भेड़ को "नाम से" जानता था (यूहन्ना 10:3), और उसकी भेड़ें उसे भली-भांति जानती थीं। निश्चय ही चरवाहा जानना चाहता होगा कि उसके झुण्ड में कितनी भेड़ें हैं, इसलिए वह उन्हें गिनता था; किन्तु वह उस झुण्ड के प्रत्येक सदस्य के विषय भी चिन्तित रहता था। यदि उनमें से एक भी खो जाती तो वह उसे ढूँढने के लिए जाता था (लूका 15:1-7)। फिर भी, परमेश्वर के झुण्ड के चरवाहों को न केवल यह जानकारी रखनी है कि उसके दायित्व में कितने सदस्य हैं, परन्तु यह भी कि जो खो गए हैं उनका क्या हुआ।

पौलुस ने, यद्यपि वह स्वयं किसी स्थानीय मण्डली का चरवाहा नहीं था, चरवाहे के रवैये का उदाहरण प्रस्तुत किया। जब उसने मंडलियों को लिखा तब वह "लोगों के लिए व्यक्ति" था। अपनी पत्रियों में उसने लोगों का नाम लेकर उनका

अभिनन्दन किया। उसने रोमियों 16 में लगभग तीस व्यक्तियों का उल्लेख किया। उन मसीहियों की आवश्यकताओं के अनुसार, व्यक्तियों के लिए उसके लेखों में प्रोत्साहन, प्रशंसा, और आग्रह सम्मिलित थे (देखें 1 कुरि. 16:10-18; फिलि. 4:2, 3; कुलु. 4:17)। वह चाहता था कि उसके सह-कर्मी उसके साथ रहें, और वह उनकी सहायता की सराहना करता था। विभिन्न समयों पर, उसने तीमुथियुस, तीतुस, और मरकुस के भी उसके साथ आ जाने की आतुरता व्यक्त की (1 कुरि. 16:10, 11; 2 तीमु. 4:9, 11; तीतुस 3:12)। जब उसने उनेसिमुस को घर भेजा, तब पौलुस ने फिलेमोन को लिखा कि कैसे उसकी इच्छा थी कि उनेसिमुस उसके ही पास रहकर उसकी आवश्यकताओं में सहायता करे (फिलेमोन 12-14)। उसे युवा प्रचारक तीमुथियुस की चिंता थी और इसलिए उसने उसे सिखाने के अतिरिक्त उसे परामर्श दिया कि वह अपने बार बार बीमार पड़ने के लिए क्या करे (1 तीमु. 5:23)।

प्रभु की कलीसिया में प्राचीनों और सेवकों को प्रत्येक सदस्य को परमेश्वर की प्रिय सन्तान के रूप में महत्व देना था। जैसे प्रभु प्रेम करता है, उन्हें भी प्रत्येक से प्रेम करना था। वे अगुवे जो भाइयों के महत्व को समझते हैं यह सब करेंगे: (1) सदस्यों को उनके नाम से जानें। (2) कलीसिया से प्रेम करें और उसे प्रत्येक सदस्य में रुचि दिखाकर, यह जानने के द्वारा कि वे लोग किस बात में रुचि रखते हैं, किस के विषय चिन्ता करते हैं और क्या योग्यता रखते हैं, प्रगट करें। (3) झुण्ड में प्रत्येक के लिए भला करें, उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति करने का प्रयास भजन संहिता 23 के अच्छे चरवाहे के उदाहरण के अनुसार करें। (4) जो भटक जाते हैं उन्हें खोजें (गला. 6:1), और प्रेम के साथ वापस समूह में लौटा लाएँ।

उपसंहार। संक्षेप में, एक प्रभावी अगुवा व्यक्तियों की कीमत पहचानता है। यीशु ने इस बात को सबके लिए निर्देश के रूप में व्यक्त किया: "अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखना" (मत्ती 19:19)।

वास्तव में किस बात का प्रभाव पड़ता है? (अध्याय 11)

हमारे आस-पास के लोगों पर किस बात का प्रभाव पड़ता है? हमारे संसार में वास्तविक महत्व किस का है? विभिन्न व्यक्ति विभिन्न रीति से इसका उत्तर देंगे, परन्तु प्रत्येक को इस पर विचार करना चाहिए। प्रति दिन हम उस बात के अनुसार निर्णय लेते हैं जो हमारे लिए महत्वपूर्ण है। वास्तव में किस बात का प्रभाव पड़ता है?

नहेम्याह 11 इस प्रश्न के कई उत्तर प्रदान करता है:

व्यक्तियों का महत्व है। व्यक्ति महत्वपूर्ण होते हैं। यदि वे महत्वपूर्ण नहीं होते, तो नहेम्याह की पुस्तक में इतने नाम नहीं दिए गए होते। इनमें से अनेकों व्यक्ति वैसे अज्ञात हैं। वे बस सामान्य व्यक्ति थे, परन्तु इतने महत्वपूर्ण अवश्य थे कि उनके नाम आने वाली पीढ़ियों के लिए दर्ज किए गए।

इतिहास का महत्व है। इसीलिए यह पुस्तक ऐतिहासिक घटनाओं की स्मृतियों को स्मरण करती है और उनका लेखा दर्ज करती है (विशेषतया अध्याय 9 देखें)।

यह नियम है कि हम अपने आप को या औरों को तब तक नहीं समझ सकते हैं जब तक कि हम उस पृष्ठभूमि को न समझें जिससे हम या वे आए हैं।

परिवार का महत्व है। इस पुस्तक में वंशावलियां हैं, जो हमें स्मरण करवाती हैं कि सामान्यतः हम जो हैं वह, पिछली पीढ़ियों सहित, अपने परिवारों के कारण हैं। भाईचारे के बंधन (जैसे कि लेवियों, यहूदा वंशियों, और बिन्यामीनियों ने अनुभव किए) परिवारों को परस्पर चिन्ता करने वाले समाज के समान बांधते हैं। हम उन परिवारों के लिए धन्यवादी हों जिनसे हम वह बने हैं जो हम हैं और जो पारिवारिक संबंधों को और विकसित करते हैं। मसीहियों के लिए, "परमेश्वर का परिवार" हमारे भौतिक परिवारों से अधिक महत्वपूर्ण होना चाहिए।

बुलाहटों का महत्व है। व्यक्ति की परमेश्वर से मिली "बुलाहट" का महत्व है। नहेम्याह के समय में कुछ को याजक होने की बुलाहट थी, तो अन्य लेवी, द्वारपाल, या गवैये थे। इन बुलाहटों को औरों ने पहचाना था; और इनका पालन करने के द्वारा, इन व्यक्तियों ने यहूदा राष्ट्र के जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। आज, परमेश्वर मसीहियों को विभिन्न कार्यों के लिए योग्यताएँ और अवसर प्रदान करने के द्वारा बुलाता है। हमारे करने के लिए उसकी बुलाहट महत्वपूर्ण है।

स्वयंसेवक धन्य हों! (11:2)

हम नहेम्याह 11:2 में पढ़ते हैं, "जिन्होंने अपनी ही इच्छा से यरूशलेम में वास करना चाहा उन सभों को लोगों ने आशीर्वाद दिया।" जबकि यह देखने के लिए कि किसे शहर में जाना होगा लोगों ने चिट्ठियाँ डालीं (11:1), प्रत्यक्षतः एक अन्य समूह ने "अपनी ही इच्छा से" यरूशलेम में जाना चाहा तथा औरों ने कृतज्ञतापूर्वक उन्हें "आशीर्वाद" दिया। यह सही भी है! वे अपने ऊपर आने वाली कुछ कीमत को चुकाकर भी वह करने को तैयार थे जो किया जाना था और जिसे अन्य करने के लिए राज़ी नहीं थे।

आज स्वयंसेवकों को "आशीषित" होना चाहिए; उन्हें पहचान मिलनी चाहिए और उदारता से देने वालों के समान उनकी प्रशंसा होनी चाहिए। उन स्वयंसेवकों के बिना जो अपने समय, अपनी सामर्थ्य, और अपने कौशल को देने के लिए तैयार रहते हैं, आज के संसार में जीवन कहीं अधिक कठिन होता। जो स्वयंसेवक कलीसिया के लिए कार्य करते हैं, कलीसिया के अगुवों को उनकी विशेष प्रशंसा करनी चाहिए। मण्डली में कार्य करने वालों को पारिश्रमिक देने में कुछ गलत नहीं है; परन्तु स्वयंसेवकों के बिना, अधिकांश मंडलियों के कार्य किए नहीं जा सकेंगे।

समाप्ति नोट्स

[1]डेरेक किडनर, *एज्रा एण्ड नहेम्याह*, द टिन्डेल ओल्ड टेस्टामेंट कॉमेन्ट्रीस (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोय: इन्टर-वर्सिटी प्रैस, 1979), 117. [2]अभिव्यक्ति "पवित्र नगर" का प्रयोग स्वर्गीय यरूशलेम को व्यक्त करने के लिए भी हुआ है, जहाँ परमेश्वर की उपस्थिति वास करती है (प्रका. 21:2, 10; 22:19)। [3]देखें तोबित 13:9; 1 मक्कैब्बीस 2:7; 2 मक्कैब्बीस 1:12; 3:1; 9:14; 15:14. [4]चिट्ठियाँ डालने का प्रयोग परमेश्वर की इच्छा जानने के लिए अनेकों बार हुआ है (देखें 10:34; गिनती 26:55;

यहोशू 7:14-18; 14:1, 2; 18:6, 8; 1 शमूएल 10:20, 21; 14:41, 42; नीति. 16:33)। [5]एच. जी. एम. विलियमसन, *एज्रा, नहेम्याह*, वर्ड बिबलिकल कॉमेन्ट्री, वोल. 16 (वाको, टेक्सस: वर्ड बुक्स, 1985), 351. [6]एडविन एम. यमाउची, "एज्रा-नहेम्याह," में *द एक्सपोज़िटर्स बाइबल कॉमेन्ट्री*, वोल. 4, *1 राजा-अय्यूब*, एडिटर फ्रैंक ई. गेबेलीयन (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ॉनडरवैन पबलिशिंग हाउस, 1988), 744. इस प्रथा का एक उदाहरण ई. 18 में हुआ, जब हेरोद एनटीपास ने अपनी राजधानी टाईबेरियास को गलील की झील के पश्चिमी तट पर बनवाया। (जोसेफस *ऐंटीक्वीटीस* 18.2.3.) [7]"मंदिर सेवक" शब्दार्थ में "नेतेनिम" हैं (देखें KJV), अर्थात "[परमेश्वर को] दिए गए।" इन व्यक्तियों को दाऊद और हाकिमों ने "लेवियों की सेवा के लिए दिया था" (एज्रा 8:20)। [8]"वंशजों" (בְּנֵי, *बेने*) के लिए शब्द का शब्दार्थ "पुत्र" होता है। [9]"मंदिर" शब्दार्थ के अनुसार "भवन" है; परन्तु इसमें कोई संदेह नहीं है कि "परमेश्वर के भवन" से तात्पर्य मंदिर ही था। [10]कियथ एन. शोविल्ले, *एज्रा-नहेम्याह*, द कॉलेज प्रैस NIV कॉमेंट्री (जोपलिन, मो.: विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी, 2001), 242.

[11]जोसफ़ ब्लेनकिनसौप्प, *एज्रा-नहेम्याह*, द ओल्ड टेस्टामेंट लाईब्रेरी (फिलेडेल्फिया: वेस्टमिनिस्टर प्रैस, 1988), 325. [12]यमौची, 748. [13]उपरोक्त. [14]किडनर, 120. [15]इसी प्रकार से, अध्याय 10 में हस्ताक्षरकर्ताओं के तीन समूहों के पहले (उनके बाद नहीं) अधिपति (नहेम्याह) का नाम आया है और (संभवतः) उसके सहायक या सचिव का। [16]रूबेन रैट्ज़लैफ एण्ड पौल टी. बटलर, *एज्रा, नहेम्याह एण्ड एस्तेर*, बाइबल स्टडी टेक्स्टबुक सीरीज़ (जोपलिन, मो.: कॉलेज प्रैस, 1979), 227. [17]किन्तु इसका उद्देश्य व्यापक होने का नहीं है, क्योंकि इसमें महत्वपूर्ण अनुपस्थितियाँ हैं। उदाहरण के लिए, यरीहो का नाम नहीं है। यहूदी जिन नगरों में रहते थे उनमें से अनेकों को यहाँ सम्मिलित किया गया है, परन्तु सभी को नहीं। [18]एफ. चार्ल्स फेनशैम, *द बुक्स ऑफ एज्रा एण्ड नहेम्याह*, द न्यू इंटरनैशनल कॉमेन्ट्री ऑन द ओल्ड टेस्टामेंट (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी, 1982), 249. [19]जेकब एम. मायर्स, *एज्रा, नहेम्याह*, द ऐंकर बाइबल, वोल. 14 (गार्डन सिटी, न्यू यॉर्क : डबलडे & कंपनी, 1965), 191. [20]व्याख्याकर्ताओं द्वारा सुझाई गई एक अन्य संभावना है कि "डेरे डाले हुए" एक सविचार दी गई स्मृति थी कि उन शहरों में उनका निवास स्थाई नहीं होगा (संभवतः फारसी अधिकारियों को आश्वस्त करने के लिए कि वे अब फारस के साम्राज्य की भूमि को फिर से ले लेने का प्रयास नहीं कर रहे हैं)।

[21]देखें जेम्स बर्टन कॉफमैन एण्ड थेलमा बी. कॉफमैन, *कॉमेन्ट्री ऑन एज्रा, नहेम्याह एण्ड एस्तेर* (एबिलीन, टेक्सस: ACU प्रैस, 1993), 218-19.